लोकजागरण की अवधारणा एवं स्वरूप–विश्लेषण

डॉ. प्रदीप कुमार*

वी. पी. ओ. नारनौंद, जिला हिसार, हरियाणा, भारत

***Email ID**: lohanpardeep2@gmail.com*

Accepted: 14.04.2023 **Published**: 01.05.2023

मुख्य शब्दः अवधारणा, लोकजागरण।

शोध आलेख सार

1400 और 1500 के दशक में भारत में एक नई तरह की सोच और जागरूकता की शुरुआत हुई। लोगों ने इसे पुनर्जागरण, पुनरुत्थान, ज्ञानोदय पुनर्जागरण, सार्वजनिक जागृति और सामाजिक सुधार जैसे विभिन्न नामों से पुकारा। यह वह समय था जब लोगों ने अलग तरह से सोचना और समाज में सकारात्मक बदलाव करना शुरू कर दिया था। कुछ लोगों ने इस समयावधि का वर्णन करने के लिए अंग्रेजी शब्द रेनेसां का भी उपयोग किया। यह महान विचार और परिवर्तन का समय था।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© IJRTS Takshila Foundation, डॉ. प्रदीप कुमार*, All Rights Reserved.*

परिचय

पुनर्जागरण का विचार डॉ.रामविलास शर्मा की *नवजागरण* नामक पुस्तक में बताया गया है। रामधारी सिंह दिनकर की एक अन्य पुस्तक *लोक जागरण* भी इसी अवधारणा पर बात करती है। अंग्रेजी शब्द *रेनेसां* का वर्णन करने के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ समझने के लिए हमें इसके पर्यायवाची शब्दों का अर्थ समझना होगा।

लोकजागरण के पर्यायवाची शब्द

रेनेसां

पुनर्जागरण शब्द फ्रांस से आया है और इसका अर्थ है एक नई शुरुआत या फिर से जन्म लेना। इसका उपयोग यूरोप में 1350 से 1650 तक के इतिहास के एक विशेष समय के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। इस दौरान बहुत सारी नई चीजें हो रही थीं जैसे नए विचार, आविष्कार और कला। लोग धर्म और राजनीति के बारे में अपने सोचने का तरीका भी बदल रहे थे। यह वह समय था जब यूरोप के कई देश नई सोच रखने के लिए प्रेरित हुए और इसीलिए इसे पुनर्जागरण कहा जाता है, जिसका अर्थ है नया जन्म या पुनर्जन्म।

यह स्पष्ट नहीं है कि इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले किसने और कब किया, और लोग अभी भी इसके बारे में बहस करते हैं। हिन्दी साहित्य कोश नामक पुस्तक में वे इस बारे में बात करते हैं कि इस शब्द का प्रयोग कैसे किया जाता था। वे कहते हैं कि यह जैकब बर्कहार्ट थे, जो इतालवी पुनर्जागरण के पहले इतिहासकार थे, जो इस शब्द को सामने लाने के लिए श्रेय के पात्र हैं। लेकिन कुछ लोग अलग तरह से सोचते हैं।

सरल शब्दों में कहें तो पुनर्जागरण शब्द का अर्थ इतिहास में एक ऐसा समय है जब चीजें बहुत बदल गईं। यह उस अवधि को संदर्भित करता है जब समाज और विचार बदल रहे थे, और लोग सामंतवाद नामक प्रणाली से दूर जाना शुरू कर रहे थे और पूंजीवाद नामक चीजों को करने के एक नए तरीके की ओर जा रहे थे। ऐसा अधिकतर 15वीं और 17वीं शताब्दी के बीच इटली में हुआ।

पुनर्जागरण यूरोप में एक विशेष समय था जो पहले आए समय से बहुत अलग था। पुनर्जागरण से पहले, चीजें बहुत अच्छी नहीं थीं। यह परेशानी, भ्रम, उदासी और बहुत अधिक प्रगति नहीं करने का समय था। लोग इस समय को अंधकार युग कहते थे। लेकिन पुनर्जागरण के दौरान, चीजें बेहतर हो गईं। यह खुशी, सफलता और प्रगति का समय था। लोगों ने कला, लेखन और वैज्ञानिक तरीके से दुनिया के बारे में सीखने पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया।

पुनर्जागरण

पुनर्जागरण शब्द का अर्थ *पुनर्जागरण* है, जो बताता है कि इसके पहले कुछ महत्वपूर्ण घटित हुआ था। यूरोप में पुनर्जागरण से पहले, एक ऐसा काल था जिसे *अंधकार युग* कहा जाता था, जहाँ चीजें इतनी अच्छी नहीं चल रही थीं। लेकिन फिर, 14वीं और 15वीं शताब्दी में, लोगों ने प्रेरणा के लिए प्राचीन रोमन और ग्रीक इतिहास को देखना शुरू कर दिया। वे उस समय की अच्छी चीजें वापस लाना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने इस काल को पुनर्जागरण कहा क्योंकि यह पुनर्जन्म या उस स्वर्ण युग में वापसी जैसा था। 1800 के दशक से पहले, भारतीय इतिहास में कोई ऐसा समय नहीं था जिसे यूरोप की तरह ष्अंधकार युग कहा जाता था। हालाँकि, भारतीय इतिहास में कुछ ऐसे कालखंड भी थे जिन्हें स्वर्ण युग कहा जाता था, जैसे वैदिक युग। महात्मा गांधी का समय और भक्ति, जिसे राम विलास शर्मा जन जागरण कहते हैं, अतीत, विशेषकर वैदिक युग से प्रेरित थी। लेकिन वास्तव में, 1800 के दशक की नई चेतना पुनर्जागरण की तरह इतिहास की पुनरावृत्ति मात्र नहीं है। बल्कि इसे भारत में एक ऐतिहासिक घटना माना जाता है। भारत में

पुनर्जागरण वास्तव में ब्रिटिश शासन की शुरुआत थी, और इसने 14वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक भारतीय समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए। इस दौरान संतों द्वारा पीड़ित एवं शोषित लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किये गये तथा पुनर्जागरण काल में ये संघर्ष और भी तीव्र हो गये।

पुनरुत्थान

पुनरुत्थान शब्द का अर्थ पुनर्जन्म या पुनरुद्धार है। इसका उपयोग उस समय का वर्णन करने के लिए किया जाता है जब अतीत की कोई चीज वापस आती है और फिर से लोकप्रिय हो जाती है। फिलहाल, इसका इस्तेमाल इंग्लैंड में *पुनरुद्धारवाद* नामक आंदोलन के बारे में बात करने के लिए किया जा रहा है। इसका मतलब यह है कि लोग अतीत से पुराने रुझानों, विचारों, मूल्यों और परंपराओं को वापस ला रहे हैं। भारत में प्राचीन वैदिक संस्कृति का लोगों के सोचने और कार्य करने के तरीके पर बड़ा प्रभाव रहा है। कभी–कभी ये मान्यताएँ और परम्पराएँ गलत तरीके से बदल गईं और समाज को दुखी कर दिया। लेकिन उन्होंने चीजों को बेहतर बनाने में भी मदद की. अतीत में बुद्धिमान लोगों ने इन परिवर्तनों के बारे में बात की और लोगों को समझाने की कोशिश की। अब *जनजागरण* के इस समय में हम अतीत के मूल्यों और परंपराओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते। इसके बारे में सोचना कुछ नया और महत्वपूर्ण है।

नवजागरण

पुनर्जागरण शब्द का अर्थ चीजों को सोचने और समझने का एक नया तरीका है जो इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था। इस शब्द का उपयोग पहली बार 1977 में डॉ. राम विलास शर्मा द्वारा लिखी गई पुस्तक में किया गया था। पुस्तक में, उन्होंने बताया कि कैसे *पुनर्जागरण* शब्द का उपयोग *पुनर्जागरण* के लिए दूसरे शब्द के रूप में किया गया था। हालाँकि, पुनर्जागरण के दो अलग–अलग काल थे। ऐसा यूरोप में 14वीं और 15वीं शताब्दी में हुआ था और यह वह समय था जब लोग समाज को बेहतर बनाने और संस्कृति पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते थे। दूसरा पुनर्जागरण 19वीं शताब्दी में हुआ और वह भी परिवर्तन का समय था, लेकिन एक अलग तरीके से। इन दोनों अवधियों का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उन्हें अपने आसपास की दुनिया के बारे में अधिक जागरूक होने में मदद मिली।

14वीं और 15वीं शताब्दी के दौरान सामंती व्यवस्था के खलिाफ विद्रोह हुए। ये विद्रोह धार्मिक आंदोलनों के रूप में प्रच्छन्न थे, लेकिन वास्तव में वे स्वार्थ और सत्ता की इच्छा से प्रेरित थे। इनमें से एक विद्रोह जर्मनी में हुआ था और वह एक ऐसा धर्म बनाना चाहता था जिसे हर कोई समझ सके और उसका हिस्सा बन सके। एक लेखक फ्रेडरिक एंगेल्स ने इस विद्रोह को चर्च और उसकी महंगी परंपराओं के खिलाफ एक आंदोलन बताया। विद्रोही प्रारंभिक ईसाई चर्च के सरल समय में वापस जाना चाहते थे और पादरी वर्ग से छुटकारा पाना चाहते थे, जो बहुत अधिक शक्ति वाला एक विशेष वर्ग था। उन्हें फैंसी चर्च पसंद नहीं थे और वे हर चीज को अधिक किफायती बनाना चाहते थे।

18वीं सदी में भारत में हालात अच्छे नहीं थे. देश को कैसे चलाया जाए, इसे लेकर बहुत भ्रम और असहमति थी। अंग्रेजों ने नियंत्रण कर लिया था और उनके प्रभाव ने लोगों को उनकी रचनात्मकता और

मौलिकता खो दी थी। कई बुरी मान्यताएँ और विचार भी थे जो लोकप्रिय हो गए थे और समाज के काम करने के तरीके को बदल रहे थे। लेकिन 19वीं सदी में एक नए तरीके की सोच का प्रसार शुरू हुआ। इससे न केवल समाज का स्वरूप बदला, बल्कि लोग कैसे सोचते थे और क्या विश्वास करते थे, यह भी बदल गया। सोचने का यह नया तरीका नए विचार और चीजों को देखने का अधिक तार्किक तरीका लेकर आया। इस समय को हम पुनर्जागरण कहते हैं क्योंकि यह नई जागरूकता और सोच का समय था।

- भारतीय लोकजागरण की पाश्चात्य लोकजागरण से भिन्नता

मध्यकाल में भारत और यूरोप कई मायनों में भिन्न थे। यूरोप में एक काल था जिसे अंधकार युग कहा जाता था, लेकिन भारत में ऐसा नहीं था। यूरोप के मंदिरों में बहुत शक्ति थी, लेकिन भारत के मंदिरों में नहीं। यूरोप में चर्च का बहुत प्रभाव था, जिसके कारण भारत में लोग धर्म के विरुद्ध जाना चाहते थे। वे धर्म और समाज द्वारा लायी गयी बुरी चीजों से मुक्त होना चाहते थे। भारत आर्थिक रूप से अच्छा कर रहा था, लेकिन सामाजिक और धार्मिक रूप से, यह पीड़ित था। लोगों के बुरे विचार और विश्वास झूठ पर आधारित थे। भारत में धर्म उतना अच्छा और दयालु नहीं था, जितना होना चाहिए।

अतीत में, लोगों की पुरानी परंपराएँ थीं जो उन्हें बढ़ने से रोकती थीं। लेकिन फिर, लोग जागने लगे और अलग तरह से सोचने लगे। वे अधिक साहसी और मजबूत हो गये। इस जागृति को शुरू करने में कबीर, दादू और नानक जैसे कुछ विशेष धार्मिक नेताओं ने मदद की। वे समाज में व्याप्त कुरीतियों से छुटकारा पाना चाहते थे। यह सिर्फ धर्म के बारे में नहीं था, बल्कि दूसरों के प्रति दयालु होने के बारे में भी था। उन्होंने जाति व्यवस्था, लोगों के साथ उनके सामाजिक वर्ग के आधार पर अलग व्यवहार करना और लोगों को दूसरों को छूने न देना जैसी समस्याओं को ठीक करने के लिए भी काम किया क्योंकि उन्हें गंदा माना जाता था। इन समस्याओं को हल करने के लिए उन्होंने तर्क का प्रयोग किया।

नवजागरण और भारतीय जनजागरण इतिहास के महत्वपूर्ण कालखंड हैं। यूरोप में पुनर्जागरण वह समय था जब धर्म, समाज, संस्कृति और साहित्य में बड़े परिवर्तन हुए। यह वह समय था जब लोगों ने अपने बारे में सोचना और पुरानी मान्यताओं पर सवाल उठाना शुरू कर दिया था। भारत में जनजागरण का एक काल भी था जिसे भक्ति काल कहा जाता है। इस दौरान, भारत में जिन लोगों के साथ समाज में बुरा व्यवहार किया जाता था, वे खुद पर विश्वास करने लगे और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने लगे। उन्होंने भेदभाव और अनुचित धार्मिक प्रथाओं जैसी चीजों के खिलाफ बात की। यह वैसा ही है जैसा यूरोप में पुनर्जागरण के दौरान हुआ था, जहां राजा राम मोहन और स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों ने भी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई थी। अतरू हम कह सकते हैं कि भारत में आधुनिक जागृति पुराने पुनर्जागरण के नये संस्करण की तरह है। यह एक महत्वपूर्ण समय है जब लोग जाग रहे हैं और जो सही है उसके लिए लड़ रहे हैं।

लोकजागरण की परिस्थितियाँ

प्रगति के लिए प्रत्येक समाज को बदलने और बढ़ने की आवश्यकता है। यह परिवर्तन धीरे–धीरे या तेजी से हो सकता है, लेकिन यह हमेशा होता रहता है। भले ही कोई समाज बहुत कठोर लगता हो और बदलाव

पसंद नहीं करता हो, फिर भी इसके संकेत मौजूद रहेंगे। परिवर्तन दो तरह से होता है समाज के भीतर से और बाहरी प्रभावों से। प्रत्येक देश और समाज समय की परिस्थितियों के आधार पर अपने स्वयं के अनूठे परिवर्तनों से गुजरता है। कभी–कभी, ये परिवर्तन स्वयं लोगों द्वारा संचालित होते हैं और कभी–कभी वे अन्य देशों से प्रभावित होते हैं।

सामाजिक परिस्थितिया

मध्यकालीन भारत में साहित्य और समाज दोनों एक–दूसरे से जुड़े और प्रभावित थे। विभिन्न कारणों से समाज भ्रष्ट एवं अराजक हो गया। उच्च वर्ग को केवल अपने हितों की परवाह थी। आक्रांताओं ने भारतीय समाज और धर्म को अत्यंत पतित बना दिया। लोगों का जीवन के प्रति उत्साह खत्म हो गया। समाज दो समूहों में विभाजित था, हिंदू और मुस्लिम। मुसलमानों ने दूसरों को इस्लाम में विश्वास दिलाने के लिए कठोर नीतियों का इस्तेमाल किया, जबकि हिंदुओं में उच्च और निम्न जातियों के बीच भेदभाव के साथ एक सख्त जाति व्यवस्था थी। इस भेदभाव के कारण लोगों के बीच झगड़े और मतभेद पैदा हुए। कवि कबीरदास ने जाति और जन्म के आधार पर मुसलमानों के बीच भी भेदभाव के बारे में लिखा।

राजनीतिक परिस्थितियाँ

अतीत में, सरकार हमेशा स्थिर नहीं होती थी और कई अलग–अलग शासक होते थे। इनमें से अधिकांश शासकों को केवल अपने धर्म की परवाह थी और उनके पास बहुत अधिक शक्ति थी। वे विलासिता का जीवन जीते थे और उन लोगों के बारे में नहीं सोचते थे जिन पर उन्होंने शासन किया था। लोग इस बात से खुश नहीं थे कि उनके साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है और उनका शासकों पर से भरोसा उठ गया। शासकों ने लोगों की पीड़ा की परवाह नहीं की और उनसे बहुत अधिक कर चुकाया। इस वजह से, कुछ धार्मिक नेताओं ने शासकों के खिलाफ बात की और उपदेश दिया कि सभी के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए। इससे लोगों को बेहतर और कम निराशा महसूस हुई।

धर्मिक परिस्थितियाँ

पूरे मानव इतिहास में, धर्म हमेशा लोगों के लिए महत्वपूर्ण रहा है। इसने उनके जीवन में एक बड़ी भूमिका निभाई है और हर किसी का इससे कोई न कोई संबंध है। अतीत में, भारत में विभिन्न प्रकार के धर्म थे, जैसे वैष्णववाद और शैववाद। बौद्ध धर्म के अंतर्गत भी विभिन्न संप्रदाय थे। उसके बाद, इस्लाम एक लोकप्रिय धर्म बन गया और इसने कई लोगों को प्रभावित किया। इस्लाम के बारे में एक मुख्य बात यह है कि यह समानता को बढ़ावा देता है और किसी के साथ भेदभाव नहीं करता है। इसके विपरीत, हिंदू धर्म में सामाजिक स्थिति और लिंग जैसी चीजों के आधार पर बहुत अधिक भेदभाव था। भले ही इस्लाम में अच्छे सिद्धांत हैं, फिर भी कुछ लोगों ने इसकी संकीर्ण विचारधारा से व्याख्या करना शुरू कर दिया और इसमें बदलाव किए। कुल मिलाकर, धर्म हमेशा से ही इंसानों के लिए महत्वपूर्ण रहा है, लेकिन इसमें कुछ समस्याएं भी हो सकती हैं।

संत वे लोग हैं जिन्होंने विभिन्न धर्मों के अच्छे हिस्सों का निष्पक्ष तरीके से उपयोग किया। उन्होंने इस बारे में सोचा और एक ऐसा धर्म बनाया जिससे हर कोई सहमत हो सके और समझ सके। यह धर्म लोगों की मदद करने के लिए है और इसे सभी लोग स्वीकार करते हैं।

आर्थिक परिस्थितियाँ

बहुत समय पहले भारत बहुत प्रसिद्ध था क्योंकि यहाँ बहुत सी बहुमूल्य वस्तुएँ थीं। लेकिन तभी महमूद गजनवी नाम का एक नेता आया क्योंकि उसने हमारी संपत्ति के बारे में सुना और उसके अनुयायियों ने हमारे शहरों पर हमला किया और हमारे मंदिरों से चोरी की। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कुछ लोगों के पास बहुत पैसा और शक्ति थी, जबकि अधिकांश लोग गरीब थे।

कुछ नियमित लोग बहुत गरीब और दुखी थे, जबकि चूर के शासक बहुत अमीर थे और अच्छी चीजों का आनंद लेते थे। इससे बुद्धिमान लोगों को एहसास हुआ कि शासकों का धन महत्वपूर्ण नहीं था। संतों ने उन्हें ऐसा धन इकट्ठा करने की सलाह दी जो उनके मरने के बाद भी काम आए।

संदर्भ

- कबीर, आचाय हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सन् 1976
- कबीर ग्रन्थावली, सं. पारसनाथ तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, सन् 1976
- कबीर ग्रन्थावली, सं. श्यामसुन्दर दास, साहित्यागार, जयपुर, संस्करण 2009
- कबीर ग्रन्थावलीसटीक, सं. पुष्पपाल सिंह, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, सन ् 1987
- कबीर वचनावली, सं. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', वाणी प्रकाशन, दरियाग ंज, नई दिल्ली, संस्करण, 2011
- कबीर वाघ्मय ;साखी, सबद, रमैनीद्ध, सं. डॉ. जयदेव सिंह व डॉ. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1981 ई.
- नानक वाणी, सं. डॉ. जयराम मिश्र, मिश्र प्रकाशन, इलाहाबाद, संवत् 2018
- रैदास रचनावली, सं. डॉ. गोविन्द रजनीश, अमरसत्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2006
- सुन्दर ग्रन्थावली, सं. पुरोहित हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता, 1936
- सुन्दर ग्रन्थावली– 1,2, सं. डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992